REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

# वृद्ध विमर्श

संजू
शोधार्थी, हिन्दी विभाग , बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक.

## प्रस्तावना :

मनुष्य के जीवन में साहित्य का विशेष स्थान है। साहित्य समाज की वास्तविकता का चित्रण करता है। साहित्य के माध्यम से हमेशा ही समाज में व्याप्त घटनाओं, प्रवृतियों, परिस्थितियों आदि को चित्रित किया जाता है। साहित्य समाज की आधारशिला होता है। साहित्य ही समाज में प्रचलित परम्पराओं तथा समस्याओं पर विमर्श करने की तरफ ध्यान आकर्षिक करता है। हिन्दी साहित्य में दलित–विमर्श, स्त्री–विमर्श, आदिवासी–विमर्श, किन्नर–विमर्श के बाद अब वृद्ध–विमर्श की गूँज सुनाई देने लगी है। आजकल समाज में युवा पीढ़ी का बोलबाला है। उसे देखते हुए वृद्ध विमर्श करना भी उचित ही है।

वृद्धावस्था को लेकर हमारे मन में एक ही तस्वीर उभरती है जो शिथिल शरीर, गिरे हुए दाँत, सफेद बालों के साथ जीवन–यापन करते हैं। मनुष्य के जीवन में पहले शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था के बाद वृद्धावस्था आती है। शैशवास्था में बच्चा दूसरों पर निर्भर रहता है। किशोरावस्था में जोश, उर्जा, शक्ति आदि से परिपूर्ण होता है। प्रौढ़ावस्था में अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन करता है। वृद्धावस्था तक पहुँचते–पहुँचते व्यक्ति का शरीर शिथिल हो जाता है। व्यक्ति दूसरों पर निर्भर रहने को विवश हो जाता है। इसी विवशतावश व्यक्ति अपने आप को कमजोर तथा जीवन से हारा हुआ महसूस करता है। परन्तु वृद्ध व्यक्ति ज्ञान का भण्डार होता है और अपने ज्ञान से वह हमें सभ्यता, संस्कृति, आचरण, सद्व्यवहार आदि का ज्ञान करवा सकता है। यदि वृद्ध व्यक्ति को उचित सम्मान मिले तो वह समाज को नई दिशा दे सकता है। वृद्धावस्था जीवन की वह अवस्था है जिसमें उम्र मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है।

## वृद्धावस्था का अर्थ

**वृद्धावस्था एक धीरे–धीरे आने वाली अवस्था है जो कि स्वभाविक व प्राकृतिक घटना है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ–पका हुआ, परिपक्व होता है।**

**लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (हिन्दी–अंग्रेजी) के अनुसार–वृद्ध का अर्थ old person होता है।**

अंग्रेजी हिन्दी कोश के अनुसार वृद्ध शब्द को old शब्द का हिन्दी पर्याय माना गया है। old का अर्थ–बूढ़ा, वृद्ध, पुराना आदि होता है।

साहित्य में नारी विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि के बाद अब वृद्ध विमर्श भी किया जाता है। साहित्य शब्द अपने आप में ही एक चिन्तन तथा विचारधाराओं का स्वरूप है। साहित्य समाज में फैली कुरीतियों, समस्याओं, घटनाओं आदि पर चिन्तन करते हुए उनके समाधान का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। समाज में साहित्य का अस्तित्व समाहित होता है। समाज या व्यक्ति से परे साहित्य का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता क्योंकि साहित्य जन–जीवन की ही व्याख्या करता है और जन–जीवन समाज का ही अंग होता है। आज

का युग परिवर्तन का युग है तथा इसी परिवर्तन के कारण हम बुजुर्गों की तरफ न ही ध्यान दे पा रहे हैं और न ही उनके अनुभव व ज्ञान का लाभ उठा पा रहे हैं। आज हमें वृद्धावस्था पर चिन्तन करने की आवश्यकता है क्योंकि बिना चिन्तन उनकी दशा में सुधार सम्भव नहीं है।

## विमर्श का अर्थः–

'विमर्श' शब्द को साधारण अर्थ में विचार, विवेचन तथा परीक्षण के रूप में लिया जाता है। किसी भी समस्या या परिस्थितियों को देखकर उनके प्रति मानसिक, सांस्कृतिक तथा वैचारिक धारणाओं का समाहार करते हुए पूर्ण रूप से चिन्तन करना तथा उसे समझने का प्रयास करना विमर्श है। हिन्दी में 'विमर्श' शब्द अंग्रेजी के Discourse शब्द से आया है जिसका अर्थ सुदीर्घ तथा गम्भीर चिन्तन से लिया जाता है। 'विमर्श' का अर्थ वास्तविक रूप में जीवन्त बहस होता है। **लोकभारती राजभाषा शब्द कोष (हिन्दी–अंग्रेजी) के अनुसार विमर्श का अर्थ पूर्ण चिन्तन आदि होता है।** साहित्य में 'विमर्श' को लेकर काफी विषयों पर चर्चा होती रही है। आज वृद्ध विमर्श पर भी इसकी आवश्यकता है। आज समाज में भागवाद तथा स्वार्थ की भावना प्रबल होती जा रही है। हम अपने जीवन के यथार्थ मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। जिसका परिणामस्वरूप नैतिकता का ह्रास हो रहा है। उन मूल्यों को देखने के लिए वृद्धावस्था एक दर्पण होती है।

## वृद्ध विमर्श–

वृद्ध विमर्श का अर्थ है वृद्धावस्था की परिस्थितियों, घटनाओं आदि का चिन्तन करना अर्थात वृद्धावस्था की समस्याओं को समझकर उनके लिए उचित समाधान करना। आज के युग में वृद्ध विमर्श अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि आज हम इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमारे पास बुजुर्गों को समझने का समय ही नहीं है। इसका मुख्य कारण संयुक्त परिवारों का टूटना है। इसी कारण हम बुजुर्गों की तरफ न ही ध्यान दे पा रहे हैं और न ही उनके अनुभव व ज्ञान का लाभ उठा पा रहे हैं। व्यावसायिक जीवन की व्यवस्तता के कारण हमारे पास पुरानी तथा नई पीढ़ी में सामंजस्य बिठाने का समय नहीं है। परिणामस्वरूप हमारी पीढ़ियाँ एक दूसरे के नजदीक आने की अपेक्षा दूर होती जा रही हैं। यह खाई हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर ले जा रही है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम अपने बुजुर्गों के ज्ञान तथा अनुभव को दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित नहीं कर पा रहे हैं। वृद्धावस्था बचपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापे तक के अनुभवों तथा गुणों का पुंज होता है। परन्तु एकल परिवारों के कारण हमारे समाज से सभ्यता और संस्कृति लुप्त होते जा रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों के साथ बैठकर विचार सांझा नहीं कर पाती, जिसके कारण मूल्यों का विघटन हो रहा है। समाज की प्रत्येक समस्या का प्रारम्भ घर से ही होता है। आज युवा तथा वुद्ध दोनों का जी जीवन अंधकार की ओर जा रहा है। आज का समाज वृद्धावस्था को समस्या की दृष्टि से देखता है और उन्हें बोझ समझता है। समाज में उचित सम्मान न मिलने के कारण वृद्ध व्यक्तियों का जीवन निराशा की तरफ जा रहा है।

## साहित्य में वृद्ध विमर्श–

साहित्य प्रारम्भ से ही समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य में प्राचीन काल से ही वृद्ध विमर्श को स्थान दिया गया है। साहित्य में सर्वप्रथम हम 'रामायण' में देख सकते हैं कि राम अपने वृद्ध पिता के कहने मात्र से ही राज्य का त्याग करके वनगमन के लिए चला जाता है। प्राचीन काल में वृद्धों को सम्मान दिया जाता था। साहित्य में भी ऐसा परिदृश्य कई स्थानों पर देखा जा सकता है।

नरेन्द्र कोहली के 'महासमर' उपन्यास में देवव्रत अपने पिता की इच्छा पूर्ति के लिए आजीवन अविवाहित रहता है तथा राज्य का त्याग कर देता है। पाण्डव भी माता कुन्ती के प्रत्येक आज्ञा का पालन बड़ी निष्ठा के साथ करते हैं। दूसरी तरफ कौरवों ने अपने बुजुर्गों की अवेहलना करके युद्ध चुना और उस युद्ध में महाविनाश हुआ। भारत के प्राचीनकाल में वृद्धों को सम्मान दिया जाता था परन्तु आज वृद्धों की स्थिति बदल गई है। वृद्धों का जीवन ज्ञान का भण्डार होते हुए भी मूल्यहीन हो गया है। वृद्धावस्था तक पहुँचते–पहुँचते व्यक्ति यह समझ जाता है कि उसने जीवन में क्या प्राप्त किया और क्या प्राप्त कर सकता है। इस परिस्थिति में वह अपने अधूरे कार्यों की जिम्मेवारी को युवा पीढ़ी के सुपुर्द कर देता है और वही युवा पीढ़ी उन्हें वृद्धाश्रमों में पहुँचा देती है। इस प्रकार वृद्धों को अपने अधिकारों से वंचित होना पड़ता है। महिलाएँ सरलता के साथ वृद्धाश्रम के जीवन को

अपना लेती हैं किन्तु पुरूषों को इसमें कठिनाई का अहसास होता है। वृद्ध व्यक्ति थोड़ा सा प्यार और आत्मीयता चाहता है और जब वही नहीं मिलती तब उसे स्वयं ही जीवन बोझ लगने लगता है। ऐसे में वृद्ध व्यक्ति के जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है।

जब हम प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति को देखते हैं तो पता चलता है कि उस समय वृद्धों की स्थिति काफी अच्छी थी। जैसे–जैसे समय में परिवर्तन होता गया वैसे–वैसे वृद्धों की दशा भी परिवर्तित होती गई। समाज, साहित्य और संस्कृति में वृद्ध सदैव से ही उपस्थित रहे हैं। वृद्ध व्यक्ति सदैव से ही गुणों का भण्डार रहे हैं परन्तु आज के युग में उनके इन गुणों को सम्मान नहीं मिल पाता। हम अपनी अत्यधिक महत्वकांक्षाओं के कारण यथार्थ मूल्यों का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

साहित्य में वृद्ध विमर्श प्राचीन काल से लेकर अब तक देखा जा सकता है। आधुनिक साहित्य में समाज में वृद्धों की बदलती हुई स्थिति तथा वृद्धों की सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया गया हैं। वृद्ध व्यक्ति जो पूरे परिवार को बोझ उठाता था, वह आज स्वयं को कमजोर और मजबूर समझने लगा है। कुछ साहित्यकारों ने इस समस्या पर विचार करके वृद्ध विमर्श की तरफ ध्यान आकर्षित किया है। वृद्ध व्यक्तियों की मानसिक चिन्ता तथा उनकी दुविधाओं को अपने शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास किया गया है ताकि युवा पीढ़ी वृद्धों की मनोदशा को समझकर उनके प्रति सद्भावना रख सकें। साहित्य के क्षेत्र में वृद्धों को केन्द्र बनाकर काफी कहानियाँ लिखी गई हैं और उनमें वृद्धों की मनोदशा को चित्रित करने का पूर्ण प्रयास किया गया है। मुन्शी प्रेमचन्द की कहानी 'बेटों वाली विधवा' में पण्डित अयोध्यानाथ के देहान्त के बाद विधवा फूलमती के साथ उसके पुत्र और बहुएँ प्रतिक्षण भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला व्यवहार करते हैं। फूलमती को अपने ही घर में भिखारिन के समान जीवन जीना पड़ता है और अंत तक इसी दशा तथा पीड़ा को सहन करते हुए उसके जीवन का अंत हो जाता है। बेटों के रहते हुए भी वृद्ध विधवा सुखी न रह सकी। प्रेमचन्द की 'बूढ़ी काकी' कहानी में भी काकी की दयनीय दशा पर विमर्श किया गया है। जब तक सम्पति काकी के नाम रहती है तब तक बुधिराम और रूपा काकी का सम्मान करते हैं। जैसे ही काकी अपनी पूर्ण सम्पति उन्हें उपहार में देती है वह उसके साथ बुरा व्यवहार करने लगते हैं। केवल एक छोटी लड़की ही उससे दयालुता पूर्ण व्यवहार करती है। जैसा कि हमें पता है बुढ़ापा बचपन का पुनरागमन होता है। जिस प्रकार बचपन में बालक का मन चंचल होता है, उसी प्रकार वृद्धावस्था में भी खाने की चीजों के लिए मन तरसता जाता है। ऐसे भावपूर्ण दृश्य प्रेमचन्द की 'बूढ़ी काकी' कहानी में देखे जा सकते हैं। बुद्धिराम और रूपा बूढ़ी काकी को पेटभर भोजन भी नहीं देते थे और दुत्कारते रहते हैं। बुद्धिराम के बेटे के तिलक कार्यक्रम के बाद बूढ़ी काकी स्वादिष्ट भोजन के लिए झूठे भोजन को खाने लगती है। रूपा का दिल पसीज जाता है और अपने किए गए व्यवहार पर पछतावा होता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने मानवता के व्यवहार को जगाने का प्रयास किया है। लेखक ने इस कहानी में बूढ़ी काकी को माध्यम बनाकर समाज के वृद्धों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार की तरफ ध्यान आकर्षित करवाया है। 'बूढ़ी काकी' समाज में व्याप्त वृद्ध समस्याओं का यथार्थ चित्रण है। साहित्य के क्षेत्र में साहित्यकारों ने अपने लेखन को माध्यम बनाकर वृद्धों के जीवन में फैले अंधकार और निराशा पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। इसी समस्या पर प्रकाश डालते हुए उषा प्रियंवदा ने भी 'वापसी' कहानी में गजाधर बाबू को माध्यम बनाकर सेवानिवृति के बाद व्यक्ति के कटु अनुभवों को चित्रित करने का प्रयास किया है। इस कहानी में गजाधर बाबू बड़े उत्साह के साथ नौकरी से सेवानिवृति होकर अपने घर परिवार में लौटते हैं। परन्तु परिवार में उनकी वापसी आधुनिक युग में टूटते सम्बन्धों के साथ एक वृद्ध की लाचारी को व्यक्त करती है।

गजाधर बाबू परिवार के साथ सम्मान तथा स्नेह से समय बिताना चाहते हैं। परन्तु कुछ समय के बाद घर में उनकी उपस्थिति खटकने लगती है। गजाधर बाबू अपने ही घर में परायापन सहन नहीं कर पाते। नयी नौकरी पर जाने का फैसला करते हैं। इसी कहानी के माध्यम से वर्तमान युग में बिखरते परिवार तथा मूल्यों के विघटन की समस्याओं चित्रित करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार साहित्य में प्राचीन काल से लेकर अब तक वृद्ध विमर्श को देखा जा सकता है। साहित्यकारों ने पूर्ण प्रयास किया है कि समाज का ध्यान वृद्धावस्था की ओर आकर्षित कर सकें। इन्होंने अपने लेखन कार्य से वृद्धों की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। समाज में वृद्ध विमर्श को समाज की महत्त्वपूर्ण कड़ी का रूप देने का पूरा प्रयत्न साहित्य में किया गया है। अनेक कहानियों तथा उपन्यासों में वृद्धों की समस्याओं को उठाया गया है और पूर्ण रूप से समाज में वृद्धों को स्थान दिलाने का प्रयास किया गया है। वृद्ध विमर्श के माध्यम से वृद्धों की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित

करते हुए समाज को जगरूक करने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। वृद्धों के लिए खोले गए वृद्धाश्रम आज व्यवसाय का रूप लिए खड़े हैं फिर भी युवा पीढ़ी उन्हें इस अन्धकार में धकेल रही है। वृद्ध व्यक्ति स्नेह और सम्मान की लालसा रखता है और युवा पीढ़ी उन्हें इन्हीं से वंचित कर रही है। साहित्य के माध्यम से साहित्यकार वृद्धों की इन्हीं समस्याओं को उजागर करने का प्रयास करता है। वृद्ध विमर्श आज के युग की आवश्यकता है। इससे वृद्धों की स्थिति में सुधार कर सकते हैं।

## सारांशः–

वृद्ध विमर्श आज के युग की आवश्यकता है क्योंकि आज वृद्धों को बोझ मानकर वृद्धाश्रमों में छोड़ दिया जाता है। इसी कारण युवावर्ग वृद्धों के अनुभवों व गुणों का लाभ नहीं उठा पा रहा है और पतन के पथ पर बढ़ जाता है। साहित्य के क्षेत्र में वृद्ध और युवा आमने–सामने की अपेक्षा सह–अस्तित्व का परिदृश्य होता है। साहित्यकार नया रचने में पुराने रचनाकारों के अनुभवों का सृजन करते हैं। वृद्ध विमर्श को आधार बनाकर हम समाज में व्याप्त वृद्धों की समस्याओं की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। वृद्ध व्यक्ति को जीवन की निराशा में न धकेलकर उन्हें जीवन को उत्साह से जीने का अधिकार दिया जा सकता है। वृद्ध विमर्श साहित्य में प्रारम्भ से ही शामिल रहा है आज भी इसका प्रयोग साहित्य में हो रहा है। वृद्ध विमर्श का साहित्य में प्रयोग वृद्धों के लिए सम्मान का मार्ग है तथा युवा पीढ़ी के लिए उनकी सफलता का मार्ग है। वृद्धों के अनुभवों व संस्कारों से युवावर्ग के जीवन मूल्यों में हो रहे विघटन को रोका जा सकता है। आज मूल्यों के विघटन के कारण युवावर्ग अलग होता जा रहा है। यदि वृद्ध विमर्श पर और भी ध्यान दिया जाए तो सम्भव है कि वृद्धों के जीवन की समस्याओं को उजागर करके लोगों के मन में खोया हुआ सम्मान तथा उनके प्रति प्रेम फिर से आ जाए। इससे लुप्त हुए मानव मूल्य समाज में फिर से लौट आएं।

## संदर्भ सूची


1. डॉ. हरदेव बाहरी – 'लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (हिन्दी–अंग्रेजी)' पृ0स0–466, लोकभारती प्रकाशन।
2. फादर कामिल बुल्के – 'अंग्रेजी–हिन्दी कोष' पृ0 सं0–433, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
3. डॉ. हरदेव बाहरी – 'लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (हिन्दी–अंग्रेजी)' पृ0स0–455, लोकभारती प्रकाशन।
4. विकास नारायण राय – 'प्रेमचंद से दोस्ती' पृ0 सं0–18, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. विकास नारायण राय – 'प्रेमचंद से दोस्ती' पृ0 सं0–25, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. प्रेमचंद – 'मानसरोवर' पृ0 सं0–66, सरस्वती प्रैस, इलाहाबाद।
7. प्रेमचंद – 'मानसरोवर' पृ0 सं0–42, सरस्वती प्रैस, इलाहाबाद।
8. प्रेमचंद – 'मानसरोवर' पृ0 सं0–55, सरस्वती प्रैस, इलाहाबाद।
9. उषा प्रियंवदा – 'वापसी' पृ0 सं0–3, भारत–दर्शन, हिन्दी साहित्यिक पत्रिका।
10. उषा प्रियंवदा – 'वापसी' पृ0 सं0–7, भारत–दर्शन, हिन्दी साहित्यिक पत्रिका।


LBP PUBLICATION